**एस० ई० थॉमस** (S. E. Thomas) के अनुसार, *"श्रम शरीर या मन के सभी मानवीय प्रयासों को दर्शाता है, जो इनाम की उम्मीद में किये जाते हैं।"* 1

**प्रो० मार्शल** (Prof. Marshall) के अनुसार, *"मन या शरीर की किसी भी तरह की थकावट आंशिक रूप से या पूरी तरह काम से प्राप्त खुशी के अलावा कुछ और अच्छी कमाई करने की दृष्टि से पूरी होती है।"* 2

## श्रम का महत्त्व
## (Siginificance of Labour)

श्रम बालकों के शैक्षणिक सामर्थ्य में निम्न प्रकार से वृद्धि करता है—

(1) स्कूल के बच्चों को सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं से रू-ब-रू करता है और सीखने का मौका देता है।

(2) स्कूल में मिलने वाली शिक्षा को अर्थपूर्ण एवं बेहतर दिशा मिलती है।

(3) ऐसे उत्पादों को अपने हाथों से बनाने में बालकों को आनंद मिलता है, जिन्हें वे रोजमर्रा इस्तेमाल करते हैं। ऐसा करने से उनके अंदर बसी किसी भी चीज को सीखने की स्वाभाविक उत्सुकता बनी रहती है।

(4) बालकों को नए कामों—मानसिक, सामाजिक और भावात्मक आदि को करने में दक्षता हासिल होती है।

(5) समय की पाबंदी, स्वच्छता, आत्मनियंत्रण, परिश्रमशीलता, कर्त्तव्य बोध, सेवा भावना, उत्तरदायित्व की भावना, उद्यमशीलता, समानता के प्रति संवेदनशीलता, भाईचारे की भावना का विकास विद्यार्थियों के एक साथ मिल-जुलकर कार्य करने से ही होता है।

(6) शिक्षकों को भी नवीन अनुभव प्राप्त होते हैं।

(7) विद्यालय की प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक है।

(8) विद्यालय को अभिभावकों तथा समाज से जोड़े रखने में सहायक है।

## श्रम को स्कूली पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के दिशा निर्देश

(1) श्रम, शारीरिक रूप से किए गए वे उत्पादक कार्य हैं, जो किसी स्थानीय व्यापार या परम्परा को इंगित करते हैं; जैसे कृषि, मत्स्यपालन, बढ़ईगिरी, सिलाई, कुम्हारगिरी आदि।

(2) बच्चों के कार्य उनकी उम्र पर निर्भर करेंगे।

(3) कार्यों का चयन, उपलब्ध भौतिक संसाधनों पर भी निर्भर करेगा, जिसे शिक्षक, स्कूल के अन्दर से या समुदाय, से एकत्रित कर सकते हैं।

(4) कार्यों का चयन, पाठ्यक्रम से निर्धारित हो, यह आवश्यक नहीं है।

(5) कार्य का चयन का किसी ऐसे पेशे से कोई संबंध नहीं है, जिसे बच्चा अपने माध्यमिक या उच्च-माध्यमिक वर्गों में ले, या अपने भविष्य के जीवन में नौकरी के रूप में ले।

(6) शिक्षक का भी उत्पाद प्रक्रिया में भाग लेना जरूरी है।

(7) बालकों के कार्य उनकी जाति, वर्ग एवं लिंग से निर्धारित नहीं होंगे।

(8) जब भी जरूरत महसूस हो शिक्षक को स्थानीय समुदाय के किसी सदस्य को कक्षा में आकर, किसी विशिष्ट कौशल को सिखाने के लिए बुलाना चाहिए।

(9) सहकर्मी शिक्षा को प्रोत्साहन देना चाहिए।

(10) बालकों को समूह में कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(11) शिक्षक को उन क्षमताओं के बारे में स्पष्ट होना चाहिए, जिसे वह कार्य आधारित कक्षा संचालित करने के दौरान बालकों में उत्पन्न करना चाहते हैं। बालकों में उत्पन्न ये क्षमताएँ, शिक्षक के मूल्यांकन के लिए, मानदण्ड के रूप में कार्य करेंगी।

इस प्रकार जीवन के सभी पहलुओं चाहे वह व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन से संबंधित हो या

1. एस. ई. थामस। 2. प्रो० मार्शल

Scanned with CamScanner

सामाजिक और व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित हो, में शारीरिक श्रम आवश्यक है। हमारे दैनिक जीवन के ऐसे कई पहलू हैं, जिन्हें हम श्रम से अलग नहीं कर सकते। वास्तव में कार्य और मानव जीवन को दो अलग-अलग चीजों के रूप में नहीं देखा जा सकता। मानव जीवन के लिए श्रम बहुत महत्त्वपूर्ण है। कुछ लोगों के लिए जहाँ पर यह आजीविका का साधन है वहीं दूसरों के लिए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का माध्यम है।

## कार्य एवं जीविका
## (Work and Livelihood)

जीविका का शाब्दिक अर्थ है, एक ऐसा व्यवसाय जिसके द्वारा जीवन में आगे बढ़ने एवं उन्नति के अवसरों का लाभ उठाया जा सके। इससे अभिप्राय मात्र एक रोजगार/जीविका का चयन नहीं है। इसका तात्पर्य उन विभिन्न पदों से है, जो क्रियाशील जीवन में कोई व्यक्ति प्राप्त कर सकता है। जीविका का चुनाव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। अपनी योग्यता के अनुसार एक विशेष व्यवसाय का चुनाव जो हम अपने भविष्य के लिए करते हैं, उसका आज के प्रतियोगी जीवन में बहुत महत्त्व है। आज जिस वृत्ति का चुनाव करते हैं वही आपके भविष्य की आधारशिला है। पहले, लोग अपनी शिक्षा पूरी करते थे, फिर अपनी जीविका का निर्णय करते थे। लेकिन आज की पीढ़ी अपनी विद्यालयी शिक्षा पूरी करने से पहले ही अपने भविष्य निर्माण की दिशा में कदम बढ़ा लेती है। कार्य हमारे जीवन के कई रूपों को प्रभावित करता है। इस भीषण प्रतियोगिता की दुनिया में प्रारम्भ से ही जीविका सम्बन्धी सही चुनाव अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए एक ऐसी प्रक्रिया की आवश्यकता है, जो किसी व्यक्ति को विभिन्न जीवनवृत्तियों से अवगत कराए। वास्तव में विद्यालय को ज्ञान, कर्म और श्रम का सामंजस्य बिठाने का केन्द्र बनाया जाना चाहिए। ऐसे स्कूल खोले जायें जहाँ बच्चों को किताबी शिक्षा के साथ-साथ बढ़ईगिरी, किसानी, सब्जी उगाना तथा डेयरी आदि विषयों का प्रशिक्षण मिल सके जिसमें बुनियादी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे अपना हुनर विकसित कर सकें। इन कार्यों से जो भी कमाई हो उससे वे लोग अपने लिए पेंसिल, स्लेट, कॉपी खरीद सकें।

नई तालीम, अनुभवजन्य-अधिगम एवं कार्य-शिक्षा इस संदर्भ में उपयोगी हो सकती है। बच्चों को सिलाई-बुनाई, खेती, बागवानी, बिजली उत्पादन, जल संरक्षण, पाक-कला आदि की शिक्षा दी जाती है। पढ़ाई के साथ बच्चों में हाथ से काम करने के संस्कार डाले जाते हैं, ताकि उन्हें नौकरी के लिए सरकार का मुँह न ताकना पड़े। इससे छात्र गांवों में रहना पसंद करेंगे। लघु उद्योगों की स्थापना से भी गाँव की महिलाओं को रोजगार मिलेगा। नई तालीम शिक्षा को जीविकोपार्जन का माध्यम बना सकती है यदि बालक को रोजगार नहीं भी मिला तो भी वह अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकता है। इस प्रकार गांधीजी ने भारत को एक बहुमूल्य चीज सौंपी है जो बुनियादी शिक्षा के रूप में नजर आती है। बुनियादी शिक्षा बहुमूल्य और महत्त्वपूर्ण है। इसको देश और दुनिया के लोग बुनियादी शिक्षा और नई तालीम के नाम से जानते हैं।

गांधीजी ने कहा था, *"नई तालीम भारत के लिए उनका अंतिम और सर्वश्रेष्ठ योगदान है।"*

## कार्य प्रशंसा एवं संतुष्टि
## (Work with Happiness and Satisfaction)

कार्य-शिक्षा में बालकों को जो काम दिया जाता है, उसके आधार पर उनके भविष्य, पेशे या कमाई के जरिए तय नहीं किए जाने चाहिएँ। वरन् ऐसे कार्य दिये जायें जो उन्हें प्रशंसा का पात्र बनाकर संतुष्टि प्रदान करें। अध्यापकों को चाहिए कि वे बालकों में कार्य के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित करें। उचित प्रशिक्षण सुविधाओं के समुचित प्रयोग करने में उन्हें सक्षम बनायें। छात्र विशेष की विभिन्नताओं के महत्त्व को समझने में सक्षम बनायें, छात्रों के सर्वोत्कृष्ट विकास और उनकी क्षमता को विकसित करें और उनके लिए उचित कदम उठायें ताकि छात्र के माता-पिता संतुष्ट हो सकें।

आज की शिक्षा प्रणाली कार्यकुशलता के दृष्टिकोण से विद्यार्थियों को सक्षम बनाने में असमर्थ है। आज के समय में बालकों के पास शैक्षणिक प्रमाण-पत्र तो होता है, लेकिन उनमें कौशल या योग्यता का एकदम अभाव रहता है। वर्तमान समय में स्कूल श्रम से संबंधित गौरव और उससे संबंधित मान्यताओं के प्रति कटिबद्धता को

Scanned with CamScanner

नष्ट कर रहे हैं, इनमें सामाजिक, बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और सहयोगात्मक कौशलों के अलावा अभिव्यक्ति, संप्रेषण, सुनियोजन, नेतृत्व, पहल और उद्यमिता से संबंधित कौशल भी शामिल हैं। रचनात्मकता, अन्तर्बोध, सामाजिक सहानुभूति, सांस्कृतिक संवेदनशीलता या वैज्ञानिक मनोवृत्ति जैसे गुण पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग नहीं हैं। अतः इस शिक्षा प्रणाली से आये अधिकांश लोगों में आत्मविश्वास की कमी होती है। कार्य-शिक्षा से ज्ञान और कौशल के बीच की मौजूदा खाई पाटने में मदद मिलेगी। अच्छी एवं सफल कार्य-शिक्षा जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। कार्य संतुष्टि सिर्फ अध्यापकों के लिए वरन् प्रशासन पर भी अपना प्रभाव डालती है?

कार्य संतुष्टि लोगों के जीवन और कार्य स्थल में उनकी उत्पादकता का महत्त्वपूर्ण पहलू है। कार्य-संतुष्टि जिम्मेदारी, कैरियर के लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा संगठन की उत्पादकता में भागीदारी का परिणाम ज्ञात करने में सहायक है। कार्य संतुष्टि बताती है कि हम कार्य को करने के लिए कितने अग्रसर हैं? एक अन्य शोधकर्ता के अनुसार कार्य-संतुष्टि एक संगठन के अंदर अपने हिस्से के योगदान के प्रदर्शन के माध्यम से लक्ष्यों की प्राप्ति के परिणाम से भावनात्मक आनंद की प्राप्ति है। विद्यालय को शिक्षक की कार्य-संतुष्टि पर अधिक ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह उनकी संतुष्टि एवं दक्षता को बढ़ावा दे सकती है। किसी भी कार्य की सफलता के लिए सकारात्मक अभिवृत्ति महत्त्वपूर्ण होती है। जहाँ शारीरिक श्रम सुख और आनंद के रास्ते खोलता है वहीं यह संतोष ही है जो लोगों को जिम्मेदार बनाता है। ~~शारीरिक श्रम कार्य तथा संतोष को निम्नलिखित उदाहरण द्वारा~~

[redacted]

किसी विद्यालय में जिसमें ऐसे बहुत सारे बच्चे हैं जिन्हें कभी किसी प्रकार का शारीरिक श्रम करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। जब उन्हें ईंटों के ढेर को साफ करने का कार्य दिया गया तब उनके अभिभावक चिंतित हो गये कि उनके बच्चे बीमार न हो जाएं क्योंकि उन्हें शारीरिक श्रम करने के लिए कहा गया था परंतु बच्चों ने कहा कि उन्हें यह कार्य करके बहुत खुशी हुई। इससे ज्यादा तो वे अपने अन्य कार्यों से थक जाते हैं। उन्हें इस कार्य से संतोष भी प्राप्त हुआ।

●●●

Scanned with CamScanner